



वीर बाल दिवसः बलिदान को नमन व प्रेरणा लेने का दिन

डॉ. पवन सिंह

सिखों के दसवें गुरु श्री गोविंद सिंह के पुत्रों का स्मरण आते ही हमारा सीनां गुरु से छाड़ी हो जाता है और मस्तक श्रद्धा से छुक जाता है।

गुरु गोविंद सिंह भारत की आत्मा का प्रार्थनित्व करने वाले उन महानायकों में से हैं जिन्होंने हमारे लिए अपना सर्वव्य बलिदान कर दिया। सिख इतिहास शहादत की लाजवाब मिसाल है।

26 दिसंबर को गुरु गोविंद सिंह के चार पुत्रों "साहिबजादों" के साहस को श्रद्धांजलि देने के लिये "वीर बाल दिवस" के रूप में चिह्नित किया गया है। वह दिन वास्तव में उनकी शहादत को नमन करने व उनके जीवन से प्रेरणा लेने का दिन है। सरसा नदी पर बिछड़ गया परिवारः 20 दिसंबर, 1704 की वो रात गुरु गोविंद सिंह जो ने अपने परिवार और 400 अन्य सिखों के साथ आनंदपुर साहिब का किला छोड़ दिया था। उस रात भयंकर सर्वी थी और बारिश हो रही थी। सेना 25 किलोमीटर दूर सरसा नदी के किनारे पहुंची ही थी कि मुगलों ने रात के अधेरे मैं धोखे से आक्रमण कर दिया। बारिश के कारण नदी उफान पर थी। कई सिख बलिदान हो गए। कुछ नदी में बह गए। इस अफरा तफरी में परिवार बिछड़ गया।

माता गुरुरी और दो छोटे साहिबजादे गुरु जी से अलग हो गये। दोनों बड़े साहिबजादे गुरु जी से साथ ही थे। साहिबजादों का बलिदानः उस रात गुरु जी ने एक खुले मैदान में खड़ा था। अब उनके साथ दोनों बड़े साहिबजादे और कुछ सिख योद्धा थे। अगले दिन जो युद्ध हुआ उसे इतिहास में ३३३ ई० ४१ ई० के नाम से जाना जाता है। गुरु गोविंद सिंह जो 40 सिख फौजों के साथ चमकौर की गढ़ी एक कच्चे किले में 10 लाख मुगल सैनिकों से मुकाबला करते हैं। एक-एक सिख दस लाख मुगलिया फौज पर भारी पड़ता है। गुरु गोविंद सिंह जी के बड़े बेटे जिनकी उम्र मात्र 17 वर्ष की है साहिबजादा अजित सिंह ने मुगल फौजों में भारी तबाही की, सैकड़ों मुगलों को मैदान के घाट लगाया। जु़गार सिंह ने युद्ध में दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिये और लड़ते -लड़ते वीरानी को प्राप्त होनी बदला। साहिबजादा अजित सिंह बलिदान हो गए। छोटे साहिबजादे जिनकी उम्र मात्र 14 वर्ष की है, बड़े भाई के बलिदान को देखते हुए पिता गुरु गोविंद सिंह जी से युद्ध के मैदान में जाने की अनुमति मारी। एक पिता ने अपने हाथों से पुत्र को सजाकर युद्ध के मैदान में भेजा। लाखों मुगलों पर भारी साहिबजादा जु़गार सिंह ने युद्ध में दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिये और लड़ते -लड़ते वीरानी को प्राप्त होनी बदला। ...पर भारतीय और फतेह सिंह स्वीकृत्य धर्म के सबसे सम्पन्न शहीदों में से हैं। मुगल सैनिकों ने औरगंजेब (1704) के आदेश पर आनंदपुर साहिब को घेर लिया। गुरु गोविंद सिंह के दो पुत्रों को पकड़ लिया गया। मुसलमान बनने पर उन्हें न मारने की पेशकश की गई थी। वजीर खान ने फिर पूछा, बोलो इस्लाम कबूल करते हो? छह साल के छोटे साहिबजादे फतेह सिंह ने नवाब से पूछा आगे मुसलमान हो गए तो फिर कभी नहीं मरेंगे न? वजीर खान अवाक रह गया। उसके मुंह से जबाब न फूटा तो साहिबजादे ने जवाब दिया कि जब मुसलमान हो की भी मरना ही है, तो अपने धर्म की खातिर क्यों न मरें। दोनों साहिबजादों को जिदा दीवार में चिनवाने का आदेश आया। दीवार चिनी जाने लगी। जब दीवार 6 वर्षीय फतेह सिंह की गर्दन तक आ गयी तो 8 वर्षीय जोरावर सिंह रोने लगा। फतेह ने पूछा, जोरावर भाई रोते क्यों हैं। जोरावर बोला, रो इसलिए रहा हूं कि दुनिया में आया मैं पहले था पर कौम के लिए शहीद तू पहले हो रहा है। इन दोनों बालोंको ने धर्म के महान सिद्धांतों से विचारत होने के बायर मत्यु को प्राप्तिकरण दी। इस प्रकार गुरु गोविंद सिंह जी का पूरा परिवार शहीद हो गया। उसी रात माता गुरुरी ने भी ठड़े बुर्ज में प्राण त्याग दिए। दिसंबर मास के इस अंतिम सप्ताह को भारत के इतिहास में "शहीदी सप्ताह" के रूप में मनाया जाता है। जीमीन पर सोने की परंपरा: दिसंबर के इस अंतिम सप्ताह में श्रद्धालुओं द्वारा जीमीन पर अपने प्राण त्याग दिए थे। नानकशी कैलेंडर के अनुसार श्रद्धालु 20 से 27 दिसंबर तक शहीदी सप्ताह भी मनाते हैं। इस अवसर पर गुरुपुरां व धर्मों में कीर्तन और पाठ करते हैं। साथ ही बच्चों को गुरु साहिब के परिवार की शहादत के बारे में भी जीवनकी अपने देश से, धर्म से, संस्कृति से वहन से प्रेम करने का सन्देश देती है। आज का दिन साहिबजादों के साहस और न्याय के क्रियान्वयन के लिए एक सच्ची श्रद्धांजलि है। माता गुरुरी, गुरु गोविंद सिंह जी एवं चारों साहिबजादों की वीरता तथा आदर्श लागों को साहस व शक्ति प्रदान करते हैं। वे अन्याय के आरे कभी नहीं झूके। उन्होंने एक ऐसे विश्व की कल्पना की, जो समावेशी और सामाजिक योग्यता हो। यह समय की मार्ग है कि अधिक से अधिक लोग उनके बारे में जान। आद्ये, वीर बाल दिवस पर गुरु पुत्रों के प्रेरक जीवन चरित्र को जन-जन तक पहुंचाएं।

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

एमपी की सियासत में पुराने हुए शिवराज

इससे पहले एमपी की सियासत में मुख्यमंत्री और वह भी शिवराज सिंह चौहान के बेहरे को बदलने की चाहाँ में इतनी गति नहीं रही दरअसल एमपी की राजनीति में अब शिवराज का चेहरा पुराना हो गया है। लंबे समय से जो चेहरे



की चमक कम हो चली है ? क्या जनता के मध्य मामा शिवराज अब उतने लोकप्रिय नहीं रहे जो भाजपा को 2023 में सत्ता के सिंहासन पर पहुंचाने का कारण बन सके ? वे कौनसे कारण हैं ? मजबूत क्षमता के बल पर मध्यप्रदेश की भाजपा की चेहरे को परिवर्तन किये जाने की हवा दे रहे हैं ? शिवराज के बाद कौन होगा 2023 में भाजपा का एमपी में मुख्यमंत्री का चेहरा ? इन सवालों के जवाब ढूँढ़ते वक्त मध्यप्रदेश की सियासत में शिवराज के उदय होने और सफल होने की कहानी जाने लिए एक खुब बहुताया है। अगले दिन जो युद्ध हुआ उसे इतिहास में ३३३ ई० ४१ ई० के नाम से जाना जाता है। गुरु गोविंद सिंह जो 40 सिख फौजों के साथ चमकौर की गढ़ी एक कच्चे किले में 10 लाख मुगल सैनिकों से मुकाबला करते हैं। एक-एक सिख दस लाख मुगलिया फौज पर भारी पड़ता है। गुरु गोविंद सिंह की चेहरे को बदलने के लिये वीर बाल दिवस के बारे में जाने की अनुमति मारी। एक पिता ने अपने हाथों से पुत्र को सजाकर युद्ध के मैदान में भेजा। लाखों मुगलों पर भारी साहिबजादा जु़गार सिंह ने युद्ध में दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिये और लड़ते -लड़ते वीरानी को प्राप्त होनी बदला। साहिबजादा अजित सिंह बलिदान हो गए। छोटे साहिबजादे जिनकी उम्र मात्र 14 वर्ष की है, बड़े भाई के बलिदान को देखते हुए पिता गुरु गोविंद सिंह जी से युद्ध के मैदान में जाने की अनुमति मारी। एक पिता ने अपने हाथों से पुत्र को सजाकर युद्ध के मैदान में भेजा। लाखों मुगलों पर भारी साहिबजादा जु़गार सिंह ने युद्ध में दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिये और लड़ते -लड़ते वीरानी को प्राप्त होनी बदला। ...पर भारतीय और फतेह सिंह स्वीकृत्य धर्म के सबसे सम्पन्न शहीदों में से हैं। मुगल सैनिकों ने औरगंजेब (1704) के आदेश पर आनंदपुर साहिब को घेर लिया। गुरु गोविंद सिंह जो 40 सिख फौजों के साथ चमकौर की गढ़ी एक कच्चे किले में 10 लाख मुगलिया फौज पर भारी पड़ता है। गुरु गोविंद सिंह जी के बड़े बेटे जिनकी उम्र मात्र 17 वर्ष की है साहिबजादा अजित सिंह ने मुगल फौजों में भारी तबाही की, सैकड़ों मुगलों को मैदान के घाट लगाया। जु़गार सिंह ने युद्ध में दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिये और लड़ते -लड़ते वीरानी को प्राप्त होनी बदला। अजित सिंह बलिदान हो गए। छोटे साहिबजादे जिनकी उम्र मात्र 14 वर्ष की है, बड़े भाई के बलिदान को देखते हुए पिता गुरु गोविंद सिंह जी से युद्ध के मैदान में जाने की अनुमति मारी। एक पिता ने अपने हाथों से पुत्र को सजाकर युद्ध के मैदान में भेजा। लाखों मुगलों पर भारी साहिबजादा जु़गार सिंह ने युद्ध में दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिये और लड़ते -लड़ते वीरानी को प्राप्त होनी बदला। ...पर भारतीय और फतेह सिंह स्वीकृत्य धर्म के सबसे सम्पन्न शहीदों में से हैं। मुगल सैनिकों ने औरगंजेब (1704) के आदेश पर आनंदपुर साहिब को घेर लिया। गुरु गोविंद सिंह जो 40 सिख फौजों के साथ चमकौर की गढ़ी एक कच्चे किले में 10 लाख मुगलिया फौज पर भारी पड़ता है। गुरु गोविंद सिंह जी के बड़े बेटे जिनकी उम्र मात्र 17 वर्ष की है साहिबजादा अजित सिंह ने मुगल फौजों में भारी तबाही की, सैकड़ों मुगलों को मैदान के घाट लगाया। जु़गार सिंह ने युद्ध में दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिये और लड़ते -लड़ते वीरानी को प्राप्त होनी बदला। अजित सिंह बलिदान हो गए। छोटे साहिबजादे जिनकी उम्र मात्र 14 वर्ष की है, बड़े भाई के बलिदान को देखते हुए पिता गुरु गोविंद सिंह जी से युद्ध के मैदान में जाने की अनुमति मारी। एक पिता ने अपने हाथों से पुत्र को सजाकर युद्ध के मैदान में भेजा। लाखों मुगलों पर भारी साहिबजादा जु़गार सिंह ने युद्ध में दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिये और लड़ते -लड़ते वीरानी को प्राप्त होनी बदला। अजित सिंह बलिदान हो गए। छोटे साहिबजादे जिनकी उम्र मात्र 14 वर्ष की है, बड़े भाई के बलिदान को देखते हुए पिता गुरु गोविंद सिंह जी से युद्ध के मैदान में जाने की अनुमति मारी। एक पिता ने अपने हाथों से पुत्र को सजाकर युद्ध के मैदान में भेजा। लाखों मुगलों पर भारी साहिबजादा जु़गार सिंह ने युद्ध में दुश्म

चित्रकृष्ण - उन्नाव संदेश

फटाफट खबरें

सुरक्षित मातृत्व जांच को जिला अस्पताल आये
गर्भवती महिलायें : एसीएमओ

अखंड भारत संदेश

चित्रकृष्ण। जिला अस्पताल संभेद अन्य स्वास्थ्य इकाइयों में प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व दिवस अभियान में सेकड़ों गर्भवतीयों को जांच की गई। अप्र मुख्य चिकित्साकारी डॉ महेन्द्र कुमार जतारिया ने जिला अस्पताल में प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व दिवस का निरीक्षण किया। उन्होंने ज्यादा से ज्यादा गर्भवतीयों को एनसी जांच के लिए लाने को आशाओं को निर्देश दिये।

जिलावार को अप्र मुख्य चिकित्साकारी डॉ महेन्द्र कुमार जतारिया ने बताया कि एनसी जांच को गर्भवतीयों को लाने को कहा गया है। जांच में यह कोई महिला उच्च जारीखिया गर्भवतीयों को समय रहते कम करते के प्रयोग किया जाता है तो उसे पहले चिन्हित करना जाये, ताकि जारीखिया गर्भवतीयों को समय रहते कम करते के प्रयोग किया जाता है। निरीक्षण करने के साथ उसके को भी समय से पहले जानकारी दी जाए। आशाओं को निर्देश दिया कि उच्च जारीखिया गर्भवतीयों को एनसी जांच की इंटीलाल पेन से को जाये। निरीक्षण दौरान जिला अस्पताल में क्षेत्र से आई 14 गर्भवतीयों की प्रसव पहले जांच की जा चुकी थी।

उन्होंने गर्भवतीयों के स्वास्थ्य की जानकारी को गर्भवतीयों के अल्ट्रासाउंड, खून और पेशाव की जांच, टीडी के टीके, बजन आदि की जांच की। अधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान दिवस पर निःशुल्क जांच को प्रसव बाद प्रस्तुत व नवजात की देखभाल को पीएसी वार्ड का भी निरीक्षण किया। एनआरसी में भर्ती सुपोषण की जरूरत वाले बच्चों के अधिभावकों से भी स्वास्थ्य लाभ की जानकारी ली। जिला मातृ स्वास्थ्य परिषदाता अभियान कुशबहान ने बताया कि चारों एफआरयू में एक सेकड़ों से अधिक महिलाओं की जांच की गई है। जांच को आई सिद्धपुर-बनाडी की नीलू ने बताया कि उसका दूसरा प्रसव होना है, उसकी जांच की गई है। जिला अस्पताल में प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान दिवस पर निःशुल्क जांच होती है।

लोगों की सोंच में बदलाव लाना है स्वच्छता का मूल उद्देश्य: ईओ



अखंड भारत संदेश

चित्रकृष्ण। कामदगिरि स्वच्छता समिति के 49वें अभियान के तहत कामतानाथ परिक्रमा मार्ग में साफ-सफाई की गई। रामायण दर्शन से लेकर यारी-सीमा सीमा तक सफाई अभियान चलता या।

रविवार को नगर पालिका के इंडो गमअचल कुरील ने सफाई अभियान दौरान कहा कि खुलू के स्वास्थ्य के प्रति लोगों की सोंच और स्वभाव में बदलाव लाना ही स्वच्छता का मूल उद्देश्य है। कामदगिरि स्वच्छता समिति के अध्यक्ष राकेश केशवानी ने कहा कि कामतानाथ परिक्रमा सभी की आशा का केन्द्र है उसे साप और स्वच्छ रखना की जिम्मेदारी है। खाड़ी एवं सफाई निरीक्षक कमलाकान्त शुक्ला ने कहा कि स्वच्छता के प्रति खुद जगत्कर्ता होकर मानवों की जागरूक करें। यहां-वहां गन्दवों न फेंकें, उचित जगह पर ही गन्दवों का निस्तारण करें।

स्वच्छ भारत मिशन के समन्वयक शिवा कुमार ने कहा कि स्वच्छ और स्वास्थ्य भारत को कल्पना पूरा करने को सभी की जिम्मेदारी होनी चाहिए। अभियान की ओर से सभी लोगों को जारीकरना किया जा रहा है कि कचरा न फेंके। अभियान में संजय, साहू, निमेलन्द्र पाण्डे, मनोज पाण्डे, अंजू वर्मा, कृष्ण शुक्ला, राजेन्द्र प्रियाठी, जाकी प्रसाद, विवेक गुप्ता, सुमित गुप्ता, शुभम, जितेन्द्र केशरानी आदि ने अभियान में सहभागिता निभाई।

मृत्यु के मंगलमय को जरूरी है भागवत कथा: नवलेश दीक्षित



अखंड भारत संदेश

चित्रकृष्ण। अंग्रेजी अनुवाद के अन्तर जान यज्ञ में भागवताचार्य नवलेश दीक्षित ने कहा कि आज मनुष्य कर्तव्यों को भूल चुका है। इस संसार में आकर जिस तरह जाने के लिये भोजन की आवश्यकता है उसी प्रकार भजन की भी जरूरत है। भजन का कोई विकल्प नहीं है।

मृत्यु के मंगलमय को जरूरी है भागवत कथा:

नवलेश दीक्षित

अखंड भारत संदेश

चित्रकृष्ण। श्रीमद्भागवत कथा अद्योत शत जान यज्ञ में भागवताचार्य नवलेश दीक्षित ने कहा कि विवाह एवं व्यक्तिगत विवाह के कारण महान बनता है।

संसार में व्यक्ति की नहीं व्यक्तिगत एवं चरित्र की पूजा होती है।

कथा का विस्तार करते हुए श्रीकृष्ण-सुदामा की अद्भुत मित्रता का वर्णन किया। जीव जब परमात्मा से सब कुछ छोड़कर मिलने जाता है तो प्रभु उसे परमात्मा सर्वार्थी को निर्भाव करता है।

रविवार को विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के ब्रह्म विवाह के लिए भोजन की आवश्यकता है।

इस विवाह का विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के लिए भोजन की आवश्यकता है।

इस विवाह का विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के लिए भोजन की आवश्यकता है।

इस विवाह का विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के लिए भोजन की आवश्यकता है।

इस विवाह का विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के लिए भोजन की आवश्यकता है।

इस विवाह का विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के लिए भोजन की आवश्यकता है।

इस विवाह का विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के लिए भोजन की आवश्यकता है।

इस विवाह का विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के लिए भोजन की आवश्यकता है।

इस विवाह का विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के लिए भोजन की आवश्यकता है।

अखंड भारत संदेश

चित्रकृष्ण। अंग्रेजी अनुवाद के अन्तर जान यज्ञ में भागवताचार्य नवलेश दीक्षित ने कहा कि विवाह एवं व्यक्तिगत विवाह के कारण महान बनता है।

संसार में व्यक्ति की नहीं व्यक्तिगत एवं चरित्र की पूजा होती है।

कथा का विस्तार करते हुए श्रीकृष्ण-सुदामा की अद्भुत मित्रता का वर्णन किया। जीव जब परमात्मा से सब कुछ छोड़कर मिलने जाता है तो प्रभु उसे परमात्मा सर्वार्थी को निर्भाव करता है।

रविवार को विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के लिए भोजन की आवश्यकता है।

इस विवाह का विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के लिए भोजन की आवश्यकता है।

इस विवाह का विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के लिए भोजन की आवश्यकता है।

इस विवाह का विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के लिए भोजन की आवश्यकता है।

इस विवाह का विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के लिए भोजन की आवश्यकता है।

इस विवाह का विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के लिए भोजन की आवश्यकता है।

इस विवाह का विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के लिए भोजन की आवश्यकता है।

अखंड भारत संदेश

चित्रकृष्ण। अंग्रेजी अनुवाद के अन्तर जान यज्ञ में भागवताचार्य नवलेश दीक्षित ने कहा कि विवाह एवं व्यक्तिगत विवाह के कारण महान बनता है।

संसार में व्यक्ति की नहीं व्यक्तिगत एवं चरित्र की पूजा होती है।

कथा का विस्तार करते हुए श्रीकृष्ण-सुदामा की अद्भुत मित्रता का वर्णन किया। जीव जब परमात्मा से सब कुछ छोड़कर मिलने जाता है तो प्रभु उसे परमात्मा सर्वार्थी को निर्भाव करता है।

रविवार को विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के लिए भोजन की आवश्यकता है।

इस विवाह का विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के लिए भोजन की आवश्यकता है।

इस विवाह का विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के लिए भोजन की आवश्यकता है।

अखंड भारत संदेश

चित्रकृष्ण। अंग्रेजी अनुवाद के अन्तर जान यज्ञ में भागवताचार्य नवलेश दीक्षित ने कहा कि विवाह एवं व्यक्तिगत विवाह के कारण महान बनता है।

संसार में व्यक्ति की नहीं व्यक्तिगत एवं चरित्र की पूजा होती है।

कथा का विस्तार करते हुए श्रीकृष्ण-सुदामा की अद्भुत मित्रता का वर्णन किया। जीव जब परमात्मा से सब कुछ छोड़कर मिलने जाता है तो प्रभु उसे परमात्मा सर्वार्थी को निर्भाव करता है।

रविवार को विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के लिए भोजन की आवश्यकता है।

इस विवाह का विवाह एवं व्यक्तिगत कथा के लिए भोजन की आवश्यकता है।

अखंड भारत संदेश

चित्रकृष्ण। अंग्रेजी अनुवाद के अन्तर जान यज्ञ में

